मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 3, अंक 57, मार्च(द्वितीय), 2019

दिलखुश जुगलबंदी: एक नवीन काव्य-विधा

लीला तिवानी

सृजन करने को ग़ालिब एक बहाना चाहिए.
कब हो जाये ये मालूम नहीं.
जब हो जाये तो यकीन नहीं.

यूँ ही सरे राह चलते-चलते कुछ शब्द कुछ शब्दों से मिले, पल भर रुके, मुलाकात हुई, कुछ बात हुई, माहौल खुशनुमा बना, महफ़िल जमी, जमती गई. खुशनुमाइयां परवान चढ़ने लगीं, शमा रोशन हुई, मन में संगीत बजने लगा, शब्दों में जुगलबंदी होने लगी. कब शुरु हुई कब खत्म हुई अन्दाज़ ही न हुआ. खुदा ने चाहा तो फिर मिलेंगे, इसी महफ़िल में, वायदा कर शब्द शब्दों से रुख़सत हुए. इस महफ़िल की रोशनी में न जाने कितनी लकीरें नज़र आईं. हर लकीर कुछ-न-कुछ कहती गई, सृजन जुगलबंदी का करती गई. कलम भी खुश थी, दिल भी खुश हुआ, सृजन 'दिलखुश जुगलबंदी' का हुआ. तवारीख़ के पन्नों में नवम्बर दो हजार अट्ठारह का अट्ठाइसवां दिन दर्ज हुआ. अब तो ग़ालिब मंज़र यह है कि इस महफ़िल में और भी परवाने आने लगे हैं, गुनगुनाने लगे हैं, शब्दों के झूमर झूमने लगे हैं. बेकरारी से इन्तज़ार होता है इस महफ़िल का, दिन बेसब्र हो चले हैं. आइए आप भी इस महफिल का आनन्द लीजिए और कुछ कहिए, शायद आप भी इस महफ़िल के परवाने बन जाएं.

कभी-कभी अचानक किसी विधा का सृजन हो जाता है, ऐसा ही अकस्मात संयोग हुआ है काव्य की एक नवीन विधा- दिलखुश जुगलबंदी के साथ-

''दिलखुश जुगलबंदी ने सबका दिल खुश कर दिया,
हमारे मन को भी हर्ष से भर दिया,
कुछ देर को ही सही, इस सकारात्मक काव्यमय संवाद ने,
मन का समस्त दुःख संताप हर लिया.''

दिलखुश जुगलबंदी के सृजन की गाथा बड़ी अनोखी और रोचक है. एक तरह से दिलखुश जुगलबंदी का सृजन अकस्मात ही हुआ. आपको यह जानकर आश्चर्य होगा, कि इसका प्रारंभिक स्त्रोत है ब्लॉग 'कमाल के किस्से-19'. इस ब्लॉग को फेसबुक पर अपलोड करते हुए हमने हमेशा की तरह दो अनमोल वचन डाले. एक सुविचार था-

गुलिस्तां मेरी सल्तनत है
इस सल्तनत के हैं हम बादशाह
गुंचे भी मिलेंगे हज़ारों यहां
ज़र्रा ज़र्रा घूम के तो देख
रात के अंधियारे में
तारे भी उतरते हैं
हमारी सल्तनत में
करते हैं गुफ्तगू
चले जाते हैं
सूरज की रोशनी आने से पहले.

सुदर्शन खन्ना ने इस पर कुछ काव्य पंक्तियां लिखीं. हमने उसका जवाब दिया. बारी-बारी से ऐसा करने पर सृजन हो गया दिलखुश जुगलबंदी का. दिलखुश जुगलबंदी की ख़ास विशेषता यह है, कि इसके सृजन के समय तो मन आनंद से सराबोर हो ही जाता है, बाद में पढ़ने से भी आनंद आता है. कोई-न-कोई सकारात्मक संदेश तो इसमें होता ही है. हम आपको सबसे पहले प्रकाशित दिलखुश जुगलबंदी भेज रहे हैं, आप लोगों ने इनको पसंद किया और यह एक

श्रंखला बन गई. यहां हम आपको बताते चलें, कि अब इसमें हमारे अन्य पाठकगण भी जुड़ रहे हैं.

लीला तिवानी की ब्लॉग वेबसाइट है-

https://readerblogs.navbharattimes.indiatimes.com/rasleela/

सुदर्शन खन्ना की ब्लॉग वेबसाइट है-
https://readerblogs.navbharattimes.indiatimes.com/sudershan-navyug/

दिलखुश जुगलबंदी का पहला परिचयात्मक कमेंट

कभी-कभी ऐसा संयोग होता है, कि फेसबुक पर हमारे पाठक-कमेंटेटर्स आमने-सामने होते हैं. ऐसा ही संयोग बुधवार 28 नवंबर, 2018 को हुआ. हम सुबह अपनी पोस्ट को फेसबुक पर अपलोड करते समय अपने सदाबहार कैलेंडर ऐप से दो अनमोल वचन भी पब्लिश करते हैं. सुदर्शन खन्ना जी कभी-कभी उन पर शायरी करते हैं. संयोगवश उस दिन सुदर्शन खन्ना जिस समय फेसबुक पर शायरी कर रहे थे, हम भी लाइन पर थे और शायरी की महफिल जमती रही और हमारी इस काव्यमय जुगलबंदी ने "दिलखुश जुगलबंदी" का रूप ले लिया. आप चाहें तो इसे दिलकश जुगलबंदी या और कोई नाम भी दे सकते हैं, ऑस्ट्रेलिया में हम अनेक बार एक ही समय सूरज-चांद को आसमान पर एक साथ देख चुके हैं, यह नजारा हम आपको पहले भी बता चुके हैं, इसलिए आप इसे दोस्ती की मिसाल भी कह सकते हैं. बहरहाल हमने इसे "दिलखुश जुगलबंदी" से संबोधित किया है, शेष आपकी राय ही कुछ कह सकेगी.

लीला तिवानी की ई.मेल-
tewani30@yahoo.co.in
सुदर्शन खन्ना की ई.मेल-
Mudrakala@gmail.com

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें